रॉबर्ट मर्टन: परिचय तथा मध्यवर्ती सिद्धांत

(Robert Merton: About & Middle Range Theory)

डॉ. अनुराग कुमार पाण्डेय

सहायक प्रोफेसर

समाजशास्त्र विभाग

जे. एस. हिन्दू (पी. जी.) कॉलेज, अमरोहा

रॉबर्ट मर्टन (1910–2003): व्यक्तित्व एवं कृतित्व

- **जन्म:** 4 जुलाई, 1910 फिलाडेल्फिया, अमेरिका
- 14 वर्ष की आयु में अपना नाम मेयर रॉबर्ट स्कोलनिक से बदलकर रॉबर्ट किंग मर्टन कर लिया।
- 1936 में हारवर्ड विश्वविद्यालय से डॉक्ट्रेट
- तुलन विश्वविद्यालय में प्रोफेसर व अध्यक्ष
- कोलंबिया विश्वविद्यालय में सर्वोच्च शैक्षणिक पद के लिए नामांकित
- मर्टन को शोध के लिए कई राष्ट्रीय व अंतर्राष्ट्रीय पुरस्कार व सम्मान
- नेशनल एकेडमी ऑफ साइंसेज में चयनित पहले समाजशास्त्रियों में से एक
- रॉयल स्वीडिश एकेडमी ऑफ साइंसेज के विदेशी सदस्य चुने जाने वाले पहले अमेरिकी समाजशास्त्री
- 1956 में अमेरिकन सोशियोलॉजिकल एसोसिएशन का अध्यक्ष
- 1994 में विज्ञान के समाजशास्त्र का पता लगाने के लिए विज्ञान का राष्ट्रीय पदक सम्मान: अमेरिकन नेशनल मेडल ऑफ साइंस (पहले समाजशास्त्री)
- अपने करियर के दौरान 20 से अधिक विश्वविद्यालयों से मानद उपाधि प्राप्त किया। (हारवर्ड, येल, कोलंबिया, शिकागो, ऑक्सफोर्ड, ओस्लो, वेल्स, हिब्रू, येरूशलम आदि विश्वविद्यालय)

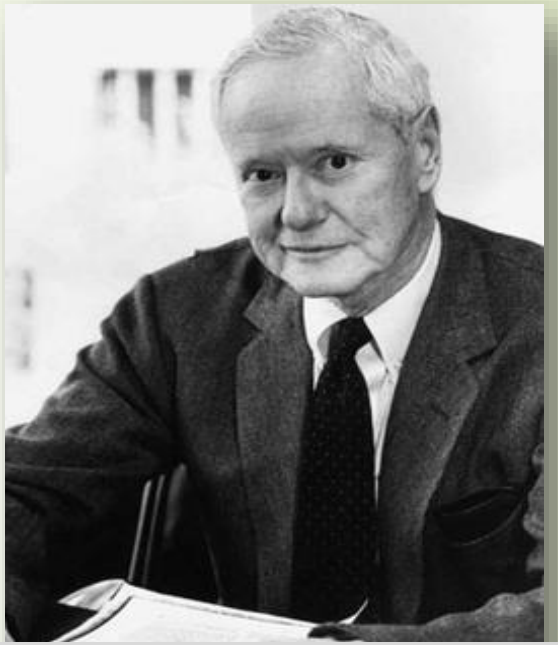

प्रमुख कृतियाँ

- *Social Structure and Anomy,* 1938
- *Science, Technology and Society in 17th Century England*, 1956
- *The Focussed Interview,* 1956
- *Social Theory and Social Structure*, 1957
- *The Sociology of Science*, 1973
- *Sociological Ambivalance*, 1976

रॉबर्ट मर्टन: बौद्धिक परिवेश

- कार्ल मार्क्स, जॉर्ज सिमेल, पीतरिम सोरोकिन व टालकॉट पारसन्स से प्रभावित
- पीतरिम सोरोकिन के मार्गदर्शन में डॉक्ट्रेट की उपाधि
- अक्सर मर्टन की तुलना पारसन्स से की जाती है। मर्टन के शब्दों में, *'हालांकि पारसन्स समाजशास्त्रीय सिद्धांत के एक मास्टर बिल्डर के रूप में बहुत प्रभावित हुआ, मैंने पाया कि खुद को उनके सिद्धांत के मोड से विदा कर रहा हूँ (साथ ही उनकी अभिव्यक्ति का तरीका भी)।'*
- पारसन्स के विपरीत मर्टन ने सामाजिक विज्ञान के लिए एक सामान्य नींव स्थापित करने की आवश्यकता पर ज़ोर दिया।
- पारसन्स के प्रकार्यात्मक विचारों में संशोधन व विस्तार
- अमेरिका के सबसे प्रभावशाली सामाजिक वैज्ञानिकों में से एक

रॉबर्ट मर्टन का सैद्धांतिक परिचय

- मर्टन को आधुनिक समाजशास्त्र का संस्थापक पिता माना जाता है।
- अपराध विज्ञान के क्षेत्र में एक प्रमुख योगदानकर्ता
- वे एक प्रखर प्रकार्यवादी थे तथा उन्होंने प्रकार्यवादी विचारों को एक विकसित मुकाम तक पहुंचाया।
- केंद्रित समूह शोध पद्धति (Focus Group Research Method) का निर्माता
- महान सिद्धांतों व अमूर्त अनुभववादी सिद्धांतों को समन्वित कर मध्यवर्ती सिद्धांतों को महत्व दिया।
- संरचनात्मक प्रकार्यात्मक मॉडल प्रतिपादित किया, जिसे मर्टन पैराडाइम कहते हैं।
- पारसन्स के अधूरे प्रकार्यवाद को आगे बढ़ाने का श्रेय मर्टन को दिया जाता है, उन्होंने प्रकट व अप्रकट/ प्रच्छन्न प्रकार्य, दुष्प्रकार्य तथा प्रकार्यात्मक विकल्पों की अवधारणाओं को प्रस्तुत किया।

मध्यस्तरीय सिद्धांत

- *Social Theory and Social Structure*, 1957
- 1949 में पारसन्स वृहत समाजशास्त्रीय सिद्धांत की पेशकश करते हैं, तब 1959 में मर्टन मध्यस्तरीय सिद्धांतों की बात करते हैं।
- सर्वप्रथम 1946 में टी. एच. मार्शल ने अपने व्याख्यान में मध्यस्तरीय सिद्धांतों की चर्चा की।
- अनुभववाद (एथनोग्राफिक) तथा अमूर्त सामान्यीकरण (केवल सिद्धांत) के मध्य सेतु के रूप में
- मर्टन के शब्दों,

'इस पुस्तक में सभी जगह हमने समाजशास्त्रीय सिद्धांत उसे कहा है जिसमें तार्किक रूप से जुड़े हुए प्रस्ताव होते हैं। इनके आधार पर आनुभविक एकरूपता का निर्माण किया जाता है। संपूर्ण पुस्तक में जिसे मैं मध्यस्तरीय सिद्धांत कहता हूँ उस पर अपने आपको केंद्रित किया है। मध्यस्तरीय सिद्धांत वे हैं जो अनिवार्य रूप से कामकाजी उपकल्पनाओं और विशाल तथा संपूर्ण समाज को सम्मिलित करने वाले सिद्धांत के बीच होता है।'

मध्यस्तरीय सिद्धांत

- मर्टन समाजशास्त्र को विज्ञान बनाना चाहते थे।
- आनुभविक परीक्षण के आधार पर सिद्धांतों की सामान्यता तथा प्रामाणिकता स्थापित होती हैं तथा इसके लिए तथ्यों के असीम भंडार की आवश्यकता पड़ती है।
- मर्टन का मानना है कि समाजशास्त्र में अभी तक तथ्यों का ऐसा भंडार उपलब्ध नहीं है, जिसके आधार पर सार्वभौमिक सिद्धांत बनाए जा सकें।
- यही कारण है कि मर्टन वृहत सिद्धांतों तथा अमूर्त अनुभववाद के बीच का रास्ता अपनाते हुए मध्यवर्ती सिद्धांतों का सुझाव प्रस्तुत करते हैं।
- मर्टन अनुभवजन्य शोध में गहरी रुचि रखते थे तथा सिद्धांत व शोध के मध्य अंतःक्रिया के आधार पर पर्याप्त अनुभवजन्य साक्ष्य के साथ मध्यवर्ती सिद्धांतों की स्थापना की वकालत करते हैं।

मध्यस्तरीय सिद्धांत किसी विशिष्ट सिद्धांत को संदर्भित नहीं करता है, अपितु यह सिद्धांत निर्माण के लिए एक दृष्टिकोण है।

मध्यस्तरीय सिद्धांत

- कार्यकारी उपकल्पनाओं (Working Hypothesis) व वृहत अमूर्त सिद्धांतों (Abstract Grand Theories) के बीच की स्थिति को मध्यस्तरीय सिद्धांत कहा गया है।
- इस प्रकार के सिद्धांतों की रचना आनुभविक शोध के वास्तविक तथ्यों के आधार पर होती है तथा ये सीमित क्षेत्र से संबंधित होते हैं।
- मर्टन मध्यस्तरीय सिद्धांतों में त्रिआयामी गठजोड़/ समन्वय की बात करते हैं –
  - सिद्धांत (Theory)
  - प्रविधि (Method): प्रकार्यात्मक पैराडाइम
  - तथ्य: प्राथमिक व द्वितीयक
- अनेक मध्यस्तरीय सिद्धांतों के सम्मिश्रण से महान सिद्धांतों का निर्माण किया जा सकता है।

मध्यस्तरीय सिद्धांत में निम्न स्तर पर छोटी–छोटी उपकल्पनाओं होती हैं। इन उपकल्पनाओं में समान रूप से पायी जाने वाली अवधारणाओं को लेकर जो सिद्धांत बनाए जाते हैं, वे मध्यस्तरीय सिद्धांत हैं। – मर्टन

मध्यस्तरीय सिद्धांत

- मर्टन का तर्क है कि समाजशास्त्रीय सिद्धांत को महत्वपूर्ण रूप से आगे बढ़ाना है तो मध्यस्तरीय सिद्धांतों के सहारे ही ऐसा किया जा सकता है। इसे दो परस्पर बिंदुओं के आधार पर आगे बढ़ाना चाहिए –
  - विशेष सिद्धांत विकसित किया जाए, ताकि उन उपकल्पनाओं की खोज की जा सके जिनकी आनुभविक रूप से जाँच की जा सके।
  - एक प्रगतिशील, अधिक सामान्य वैचारिक योजना विकसित किया जाए, जो पर्याप्त हो तथा विशेष सिद्धांतों के समूहों को समेकित करे।
- मर्टन का विचार था कि समाजशास्त्र के क्षेत्र में ऐसे सार्थक सिद्धांतों की रचना की जाए, जिनका आनुभविक परीक्षण किया जा सके।

मध्यस्तरीय सिद्धांत की विशेषताएँ

आनुभविक आधार: मध्यस्तरीय सिद्धांत जमीन से जुड़े रहते हैं।

मध्यस्तरीय सिद्धांत अमूर्त होते हैं।

सामान्यीकरण में नियमितता होती है।

मध्यस्तरीय सिद्धांत, वृहत सिद्धांत तथा छोटी–छोटी उपकल्पनाओं के मध्य होते हैं।

मध्यस्तरीय सिद्धांतों के लाभ व हानी

मध्यस्तरीय सिद्धांतों के लाभ

- अपेक्षाकृत अधिक वैज्ञानिक: परीक्षणयोग्य, तथ्यों पर आधारित
- व्यावहारिक रूप से उपयुक्त
- सीमित नमूने पर आधारित
- समय व संसाधन की बचत

मध्यस्तरीय सिद्धांतों के हानि

- ऐसे सिद्धांतों को निर्मित कर पाने के सीमित अवसर (कम अमूर्तताओं के होने के कारण)
- मध्यस्तरीय सिद्धांतों से संबंधित घटनाओं की पहचान कर पाना मुश्किल (व्यक्तिनिष्ठता पर आश्रित)
- अनुभववाद पर अधिक केंद्रित

Next Class:

रॉबर्ट मर्टन: प्रकार्यात्मक पैराडाइम तथा विचलन

(Robert Merton: Functional Paradigm & Deviance)